राजनीति विज्ञान–323

कक्षा 12 के लिए पाठ्यक्रम

राजनीतिक विज्ञान–323

टिप्पणी:

50 प्रश्नों वाले एक प्रश्न पत्र में से 40 प्रश्नों को हल करने की आवश्यकता होगी।

आजादी के बाद से भारत में राजनीति

1. एक दल के प्रभुत्व का युग: पहले तीन आम चुनाव, राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति, राज्य स्तर पर असमान प्रभुत्व, कांग्रेस की गठबंधन प्रकृति। प्रमुख विपक्षी दल।

2. राष्ट्र–निर्माण और इसकी चुनौतियाँ: राष्ट्र–निर्माण के लिए नेहरू का दृष्टिकोण: विभाजन की विरासत: 'शरणार्थी' पुनर्वास की चुनौती, कश्मीर समस्या। राज्यों का निर्माण और पुनर्गठन; भाषा को लेकर राजनीतिक संघर्ष।

3. नियोजित विकास की राजनीति: पंचवर्षीय योजनाएँ, राज्य क्षेत्र का विस्तार और नए आर्थिक हितों का उदय। अकाल और पंचवर्षीय योजनाओं का निलंबन। हरित क्रांति और उसके राजनीतिक परिणाम।

4. **भारत के विदेश संबंध:** नेहरू की विदेश नीति। 1962 का भारत–चीन युद्ध, 1965 और 1971 का भारत–पाक युद्ध। भारत का परमाणु कार्यक्रम और विश्व राजनीति में बदलते गठबंधन।

5 कांग्रेस प्रणाली: चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना: नेहरू के बाद राजनीतिक उत्तराधिकार। गैर–कांग्रेसवाद और 1967 की चुनावी उथल–पुथल, कांग्रेस का विभाजन और पुनर्गठन, 1971 के चुनावों में कांग्रेस की जीत, 'गरीबी हटाओ' की राजनीति।

6. संवैधानिक/लोकतान्त्रिक व्यवस्था का संकट: 'प्रतिबद्ध' नौकरशाही और न्यायपालिका की तलाश। गुजरात में नवनिर्माण आंदोलन और बिहार आंदोलन। आपातकाल: संदर्भ, संवैधानिक और अतिरिक्त–संवैधानिक आयाम, आपातकाल का प्रतिरोध। 1977 के चुनाव और जनता पार्टी का गठन। नागरिक स्वतंत्रता संगठनों का उदय।

7. क्षेत्रीय आकांक्षाएं और संघर्ष: क्षेत्रीय दलों का उदय। पंजाब संकट और 1984 के सिख विरोधी दंगे। कश्मीर की स्थिति। उत्तर पूर्व में चुनौतियां और प्रतिक्रियाएं।

8. नए सामाजिक आंदोलनों का उदय: किसान आंदोलन, महिला आंदोलन, पर्यावरण और विकास प्रभावित जन आंदोलन। मंडल आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन और उसके परिणाम।

9. लोकतांत्रिक उभार और गठबंधन की राजनीति: 1990 के दशक में भागीदारी का उभार। JD और BJP का उदय। क्षेत्रीय दलों और गठबंधन की राजनीति की बढ़ती भूमिका। UF और NDA सरकारें। 2004 चुनाव और UPA सरकार।

10. हाल के मुद्दे और चुनौतियाँ: वैश्वीकरण की चुनौती और प्रतिक्रियाएँ: नई आर्थिक नीति और इसका विरोध। उत्तर भारतीय राजनीति में OBC का उदय। चुनावी और गैर चुनावी क्षेत्र में दलित राजनीति। सांप्रदायिकता की चुनौती: अयोध्या विवाद, गुजरात दंगे।

समकालीन विश्व राजनीति

1. विश्व राजनीति में शीत युद्ध काल: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दो शक्ति गुटों का उदय। शीत युद्ध के दायरे। द्विध्रुवीयता की चुनौतियाँ: गुटनिरपेक्ष आंदोलन, नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की खोज। भारत और शीत युद्ध।

2. 'दूसरी दुनिया' का विघटन और द्विध्रुवीयता का पतन: विश्व राजनीति में नई संस्थाएं: रूस, बाल्कन राज्य और मध्य एशियाई राज्य, कम्युनिस्ट शासन के बाद में लोकतांत्रिक राजनीति और पूंजीवाद का परिचय। रूस और अन्य साम्यवादी देशों के साथ भारत के संबंध।

3. विश्व राजनीति में अमेरिकी प्रभुत्व: एकध्रुवीयता का विकास: अफगानिस्तान, पहला खाड़ी युद्ध, 9/11 की प्रतिक्रिया और इराक पर हमला। अर्थव्यवस्था और विचारधारा में अमेरिकी वर्चस्व और चुनौती। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अपने संबंधों के संबंध में भारत का पुनर्संवाद।

4. आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के वैकल्पिक केंद्र: माओ युग के बाद आर्थिक शक्ति के रूप में चीन का उदय, यूरोपीय संघ, ASEAN का निर्माण और विस्तार। चीन के साथ भारत के बदलते रिश्ते

5. उत्तर-शीतयुद्ध युग में दक्षिण एशिया: पाकिस्तान और नेपाल में लोकतंत्रीकरण और उसका उत्क्रमण। श्रीलंका में जातीय संघर्ष। क्षेत्र पर आर्थिक वैश्वीकरण का प्रभाव। दक्षिण एशिया में शांति के लिए संघर्ष और प्रयास। अपने पड़ोसियों के साथ भारत के संबंध।

6. एकध्रुवीय विश्व में अंतर्राष्ट्रीय संगठन: संयुक्त राष्ट्र का पुनर्गठन और भविष्य। पुनर्गठित संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थिति। नए अंतर्राष्ट्रीय नायकों का उदय: नए अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन, गैर सरकारी संगठन। वैश्विक शासन के नए संस्थान कितने लोकतांत्रिक और जवाबदेह हैं?

7. समसामयिक दुनिया में सुरक्षा: सुरक्षा की पारंपरिक चिंताएं और निरस्त्रीकरण की राजनीति। गैर-पारंपरिक या मानव सुरक्षा: वैश्विक गरीबी, स्वास्थ्य और शिक्षा। मानवाधिकारों और प्रवासन के मुद्दे।

8. वैश्विक राजनीति में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन: पर्यावरण आंदोलन और वैश्विक पर्यावरण मानदंडों का विकास। पारंपरिक और सामान्य संपत्ति संसाधनों पर संघर्ष। मूलवासियों के अधिकार। वैश्विक पर्यावरणीय बहस में भारत की दृष्टि।

9. वैश्वीकरण और इसके आलोचक: आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अभिव्यक्तियाँ। वैश्वीकरण के परिणामों की प्रकृति पर बहस। वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन। वैश्वीकरण के एक दायरे के रूप में भारत और इसके खिलाफ संघर्ष।